सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्षः 7 ● अंकः 341 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार, 17 जनवरी, 2022
मूल्य ₹ 3/-

जो व्यक्ति जीवन में समय का ध्यान नहीं रखता है, उसके साथ असफलता और पछतावा ही लगता है।
–चाणक्य

कथक सम्राट बिरजू महाराज के निधन... 8 | उत्तराखंड चुनाव: खोया हुआ... 3 | यूपी में टिकट कटने से उत्तराखंड... 7

ये है भाजपा का चेहरा!

लक्ष्मीकांत वाजपेयी का टिकट काटकर चरित्रहीन को बना दिया प्रत्याशी

- » प्रदेश में भाजपा को मजबूत करने वाले अपने ही नेता को डाल दिया हाशिए पर
- » भाजपा प्रत्याशी कमलदत्त शर्मा का वीडियो वायरल पीट रहे हैं महिला को
- » महिला के पति ने भाजपा प्रत्याशी पर लगाए बेहद गंभीर आरोप
- » विपक्ष बोला, भाजपा अपराधियों का करती है संरक्षण, यही है उसका असली चेहरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लक्ष्मीकांत वाजपेयी

कमल दत्त शर्मा (भाजपा प्रत्याशी)

"यह भाजपा का चरित्र है। वह हमेशा से महिला विरोधी रही है। यही वजह है कि वह अपने कद्दावर नेता का टिकट काटकर एक चरित्रहीन और महिला विरोधी व्यक्ति को अपना प्रत्याशी बनाया है। यह भाजपा के चाल चरित्र और चेहरे को उजागर करती है।
सुनील सिंह साजन, एमएलसी, सपा

"भाजपा में अत्याचारी, दुराचारी और अपराधी तत्वों का जमावड़ा है। यह टिकट देने के उनके तरीके से भी साफ हो चुका है। उसने अपने उस नेता लक्ष्मीकांत वाजपेयी का टिकट काट दिया, जिसने यूपी में भाजपा को खड़ा किया। यही नहीं भाजपा ने उनकी जगह एक महिला विरोधी और चरित्रहीन व्यक्ति को टिकट दे दिया। यही इसका असली चेहरा है।
दीपक सिंह, एमएलसी, कांग्रेस

"महिला उत्पीड़क होना या महिलाओं के प्रति ओछी मानसिकता रखना भाजपा में टिकट और बड़े पद पाने के लिए आवश्यक मेरिट है। आज की भाजपा में इनके आगे साफ छवि के पुराने और मेहनती लोग चुन-चुन के किनारे कर दिए जाते हैं लेकिन जनता को ये सब पसन्द नहीं, भाजपा जल्द ही पूरे देश मे हाशिये पर होगी।
वैभव माहेश्वरी, प्रवक्ता, आप

"लक्ष्मीकांत वाजपेयी जैसे कद्दावर नेता का टिकट काटकर महिला का उत्पीड़न करने वाले व्यक्ति को टिकट दिया जाना भाजपा के चाल-चरित्र और चेहरे को उजागर करता है। सच यह है कि भाजपा में अपराधियों और दुराचारियों को संरक्षण मिलता है और जमीनी नेताओं को हाशिए पर ढकेल दिया जाता है।
अनिल दुबे, राष्ट्रीय सचिव, आरएलडी

लखनऊ। एक बार फिर भाजपा का चाल-चरित्र और चेहरा उजागर हो गया है। ताजा मामला भाजपा के कद्दावर नेता लक्ष्मीकांत वाजपेयी से जुड़ा है। स्वच्छ छवि के लोगों को टिकट देने का दावा करने वाली भाजपा ने न केवल अपने कद्दावर नेता लक्ष्मीकांत वाजपेयी का टिकट काट दिया बल्कि उनकी जगह एक ऐसे व्यक्ति को टिकट दिया, जिसका चरित्र विवादित है। भाजपा ने कमल दत्त शर्मा को मेरठ शहर से टिकट दिया है, जिनका एक वीडियो सोशल मीडिया पर चल रहा है। इसमें वे इस महिला को पीटते दिख रहे हैं और दूसरी ओर महिला का पति शर्मा पर गंभीर आरोप लगा रहा है। वीडियो के सोशल मीडिया पर आने के बाद विपक्ष ने भाजपा पर जमकर हमला बोला है। विपक्ष का कहना कि भाजपा न केवल महिला विरोधी है बल्कि अपराधियों को संरक्षण देती है।

अटल-आडवाणी के जमाने की भाजपा अब पूरी तरह बदल चुकी है। अब वहां नैतिकता और आदर्श बेमानी हो चुके हैं। सत्ता पाने के लिए किसी भी व्यक्ति को टिकट दिया जा रहा है। यूपी विधान सभा चुनाव के लिए भाजपा ने जिस तरह प्रत्याशियों का चयन किया है, वह उसके आदर्शों और नैतिकता के दावों की पोल खोल रहे हैं। भाजपा ने पहले और दूसरे चरण के लिए सूची जारी कर दी है लेकिन उसने अपने कद्दावर नेता लक्ष्मीकांत वाजपेयी का टिकट काटकर ऐसे व्यक्ति को दिया है जिस पर महिला उत्पीड़न और चरित्रहीनता के आरोप हैं जबकि लक्ष्मीकांत वाजपेयी न केवल भाजपा के स्वच्छ छवि के कद्दावर नेता हैं बल्कि यूपी में उन्होंने अपने दम पर भाजपा को खड़ा किया है। 2012-14 के दौर में लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने तत्कालीन सरकार के खिलाफ जमकर अभियान चलाया था। स्कूटर पर घूम-घूमकर भाजपा का प्रचार किया था। हालांकि वे 2017 में विधान सभा चुनाव हार गए थे। माना जाता है कि उन्हें साजिशन हराया गया। 2017 के बाद भाजपा ने अपने इस तेजतर्रार नेता को हाशिए पर डाल दिया। ब्राह्मणों की नाराजगी दूर करने के लिए लक्ष्मीकांत वाजपेयी को कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया लेकिन भाजपा ने उनकी जगह दागी छवि के नेता कमलदत्त शर्मा को अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया है। इन्हीं कमल दत्त शर्मा का एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वे एक महिला को पीटते हुए दिखाए गए है। वीडियो में महिला का पति कमलदत्त शर्मा पर अपनी पत्नी से निजी संबंध रखने का गंभीर आरोप लगाते दिख रहा है। सवाल यह है कि क्या ऐसे ही लोगों को भाजपा विधान सभा में भेजकर महिला सुरक्षा करेगी?

सुनील भराला के समर्थकों ने जेपी नड्डा के आवास पर की नारेबाजी

भाजपा ने अपने तेज तर्रार नेता सुनील भराला का भी टिकट काट दिया। इसके कारण उनके समर्थक इतने नाराज हुए कि वे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के आवास पर पहुंचे और सुनील भराला के समर्थन में जमकर नारेबाजी की।

आज छह बजे देखिये ज्वलंत विषय पर चर्चा हमारे यू ट्यूब चैनल 4PM News Network पर

सपा की सरकार बनी तो सभी फसलों पर देंगे एमएसपी: अखिलेश

- » किसानों को बिजली फ्री, लोन पर नहीं देना होगा ब्याज
- » शपथ लेने के 15 दिन के भीतर कराएंगे गन्ने का भुगतान
- » सपा प्रमुख ने अन्न लेकर भाजपा को हराने का लिया संकल्प

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव आज अलग अंदाज में दिखे। लखीमपुर खीरी से आए किसान तेजिंदर सिंह विर्क के साथ अखिलेश यादव ने हाथ में अन्न लेकर भाजपा को हराने का संकल्प लिया। उन्होंने ऐलान किया कि प्रदेश में सपा की सरकार बनने पर सभी फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य लागू होगा। शपथ लेने के 15 दिन में सभी किसानों के गन्ना मूल्य का भुगतान कराया जाएगा।

अखिलेश यादव ने कहा कि लखीमपुर खीरी की हिंसा में तेजिन्दर सिंह विर्क को भी गाड़ी से कुचलने का प्रयास किया गया है। हमारी सरकार बनने पर हम इनका सम्मान करेंगे। इसके साथ ही किसानों के खिलाफ दर्ज सभी केस को वापस लेंगे। हम किसानों को सिंचाई के लिए बिजली मुफ्त करने के साथ ही साथ ब्याज मुक्त लोन तथा किसानों के लिए बीमा एवं पेंशन की व्यवस्था भी करेंगे। हमारा घोषणा पत्र भाजपा के घोषणा पत्र के बाद आएगा।

फोटो: सुमित कुमार

सपा-रालोद गठबंधन के दो और प्रत्याशी घोषित

लखनऊ। समाजवादी पार्टी ने प्रत्याशियों की एक और सूची जारी की। सूची में बागपत की दो सीट पर राष्ट्रीय लोकदल के दो प्रत्याशी उतरेंगे। गठबंधन ने बागपत के छपरौली से पूर्व विधायक वीरपाल राठी और बड़ौत से जिला बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष जयवीर सिंह तोमर पर दांव लगाया है।

बदलाव के लिए यूपी में चलेगी झाड़ू : संजय सिंह

» आप की 150 सीटों पर प्रत्याशियों की पहली सूची जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी सभी 403 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। आम आदमी पार्टी के यूपी प्रभारी और राज्य सभा सदस्य संजय सिंह ने 403 सीटों में से 150 सीटों पर चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों के नामों की घोषणा की। उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष सभाजीत सिंह के साथ प्रेसवार्ता कर प्रत्याशियों की घोषणा करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में बदलाव की नई राजनीति के लिए राजनीति की गंदगी पर झाड़ू चलाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, किसानी को राजनीति के केंद्र में मुद्दे के रूप में लाने के लिए आम आदमी पार्टी उत्तर प्रदेश की सभी 403 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

संजय सिंह ने कहा कि आप ने अपनी पहली सूची में चुनावी मैदान में

अच्छे और सुयोग्य उम्मीदवारों को उतारा है। इनमें शिक्षित, पेशे से डॉक्टर और इंजीनियर उम्मीदवार भी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इनमें से लगभग 150 सीटों पर प्रत्याशियों का चयन अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्व में केंद्र के हमारे नेताओं ने लिया है और उस पर स्वीकृति दी है। जिनमें से आज 403 में 150 प्रत्याशियों की पहली सूची आम आदमी पार्टी की ओर से जारी की जा रही है। और बाकी प्रत्याशियों की सूची भी जल्द जारी की जाएगी।

लखनऊ की सीटों पर 'आप' ने घोषित किए प्रत्याशियों के नाम

लखनऊ की सभी सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा कर दी गई हैं। लखनऊ मध्य से नदीम अशरफ जायसी, लखनऊ पूरब से आलोक सिंह, लखनऊ उत्तर विधानसभा से अमित श्रीवास्तव त्यागी, लखनऊ पश्चिम विधानसभा से राजीव बक्शी, मोहनलालगंज से सूरज कुमार और सरोजनीनगर से रोहित श्रीवास्तव को चुनाव मैदान में उतारा है। आदमी पार्टी ने भाजपा के वर्तमान विधायक पंकज सिंह के खिलाफ नोयडा से पंकज अवाना को चुनाव लड़ा रही है। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के सिराथू से आम आदमी पार्टी ने विष्णु कुमार जायसवाल को अपना प्रत्याशी घोषित किया है।

जल्द जारी करेंगे घोषणा पत्र

राज्य सभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि हम लोगों का यह मानना है कि घोषणापत्र जो है यह हमारी गारंटी है इसलिए हमने उसको गारंटी पत्र नाम दिया है। हमने उसके लिए टीम बनाई है और जनता के जो सुझाव आएंगे उसके आधार पर हम अपना एक बेहतरीन घोषणा पत्र सामने लेकर आएंगे। पांच हजार रुपये बेरोजगारों को 10 लाख नौकरियां। इसके अलावा 18 साल से ऊपर की महिलाओं को एक हजार रुपये प्रतिमाह देने का वादा हम कर चुके हैं। इसके साथ ही 300 यूनिट बिजली भी फ्री देंगे।

किसानों के लिए लड़ने वालों दलों को हमारा आशीर्वाद : राकेश टिकैत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में सपा और रालोद गठबंधन प्रत्याशियों को खुला समर्थन देने के बाद किसान नेता नरेश टिकैत ने अब पलटी मार ली है। किसान नेता नरेश टिकैत ने अपने पिछले बयान से पलटते हुए कहा कि हम चुनाव में किसी का भी समर्थन नहीं कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यहा तो पहले से ही हर पार्टी का आदमी आता रहता है।

कल गठबंधन प्रत्याशी राजपाल बालियान भी आते थे वो किसान भवन में आये थे हम तो सभी को अपना आशीर्वाद देते है। उसमे कोई समर्थन वाली बात नहीं है। थोड़ी घनी बातचीत हमारे मुंह से निकल गयी होगी। हमें मालूम नहीं था की संयुक्त किसान मोर्चे का किसी भी पार्टी के प्रत्याशी को समर्थन देने पर पाबंदी है। टिकैत ने कहा कि इसलिए हमारा किसी को कोई समर्थन नहीं है। हमारा तो सभी को

आशीर्वाद है। आशीर्वाद तो पहले से महेंद्र सिंह टिकैत भी देते आये है। कल महागठबंधन वाले आए थे। किसान भवन में लोग जुटे थे, लेकिन कल हम ज्यादा बोल पड़े। संयुक्त किसान मोर्चा सर्वोपरि है, हमारी ओर से किसी को भी समर्थन नहीं है। किसी भी दल का कोई भी नेता आएगा तो हम उसे आशीर्वाद देंगे। यहां आकर कोई भी वोट मांगने की बात न करे. वोट मांगने की बजाय लोग आशीर्वाद लेने के लिए आएं। यहां आएं लोग आशीर्वाद लें और चुनाव लड़ें। हम किसी भी अनदेखी नहीं करेंगे।

भाजपा सरकार ने पिछड़ों का कभी भला नहीं किया : बलराम

» अयोध्या में भाजपा नेता बलराम मौर्य सपा में शामिल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अयोध्या में स्वामी प्रसाद मौर्य के करीबी रिश्तेदार बलराम मौर्य ने भी समाजवादी पार्टी का दामन थाम लिया है। वह स्वामी प्रसाद के मौर्य के साथ बसपा व भाजपा में भी थे। स्वामी के सपा में जाने के बाद से ही मौर्य बिरादरी के नेता बलराम के सपा में जाने के प्रबल आसार थे। भाजपा छोड़कर सपा में पहुंचे शामिल बलराम मौर्य का समाजवादी पार्टी कार्यालय पर स्वागत किया गया। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष गंगा सिंह यादव व संचालन महासचिव हामिद जाफर मीसम ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व मंत्री तेज नारायण पांडे पवन उपस्थि रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री ने कहा कि समाज का सम्मान सपा के अलावा अन्य किसी पार्टी में नहीं है। इनके आने से अब 2022 में सपा की सरकार को बनने से कोई नहीं रोक सकता।

न अली, न बाहुबली, सिर्फ बजरंग बली, बीजेपी विधायक के बयान से निर्वाचन आयोग खफा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। गाजियाबाद में लोनी विधानसभा सीट से भाजपा के विधायक एवं मौजूदा प्रत्याशी नंदकिशोर गुर्जर के कहा है कि लोनी में न अली, न बाहुबली, सिर्फ बजरंगबली। प्रत्याशी के इस बयान पर निर्वाचन आयोग ने संज्ञान लिया है। रिटर्निंग ऑफिसर ने उन्हें नोटिस जारी करके जवाब मांगा है। विधानसभा क्षेत्र लोनी के रिटर्निंग ऑफिसर संतोष कुमार राय ने नंदकिशोर गुर्जर को भेजे नोटिस में कहा है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वह इस तरह का बयान बोलते हुए दिखाई दे रहे हैं।

निर्वाचन आयोग के निर्देश अनुसार ऐसी कोई गतिविधि नहीं की जाएगी, जिससे जातियों, समुदायों, धार्मिक समूहों के बीच मतभेद बढ़ सकते हों या आपसी घृणा-तनाव पैदा हो सकते हों।

रिटर्निंग ऑफिसर ने कहा नंदकिशोर गुर्जर अपना स्पष्टीकरण तीन दिन में दें, वरना एक पक्षीय कार्रवाई कर दी जाएगी। इस मामले में नंदकिशोर बोले कि मैं बजरंगबली का भक्त हूं। इसलिए ये मेरी आस्था का विषय है। जहां तक अली की बात है तो जो मोहम्मद अली जिन्ना था, उसने कत्लेआम कराया था, देश का बंटवारा किया था, उस संबंध में हमने बात कही है। बाहुबलियों के संबंध में जो चुनाव आयोग का निर्देश है कि उन्हें टिकट नहीं मिलना चाहिए, हमारे यहां एक बाहुबली को टिकट दिया गया है, हमने उसी संबंध में ये बात कही है।

वेस्ट यूपी में टिकट बंटवारे के बाद भाजपा में बगावत

अधिकतर सीटों पर विरोध, जेपी नड्डा के घर तक पहुंचा मामला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। वेस्ट यूपी में पहले चरण के चुनाव से पहले भाजपा में विरोध के सुर मुखर हो उठे हैं। पार्टी में टिकट को लेकर बगावत की जो चिंगारी प्रत्याशियों की सूची जारी होने से पहले भड़की थी, वह विरोध अब खुलकर सामने आ गया है। पार्टी कार्यकर्ता प्रत्याशी से नाखुश हैं, तो कहीं खुद या अपने चहेते को टिकट न मिलने से नाराजगी है। अपनों का यह विरोध चुनाव में अंदरखाने में पार्टी को नुकसान पहुंचा सकता है। टिकटों के विरोध का मामला जेपी नड्डा के घर तक पहुंच गया है, उन्होंने विरोध कर रहे नेताओं को वार्ता के लिए बुलाया है।

मेरठ की सिवालखास सीट पर भाजपा ने जाट चेहरे के रूप में मनिंदर पाल सिंह को उतारा है। उनको लेकर पार्टी में खेमेबाजी शुरू हो चुकी है और कार्यकर्ता विरोध में हैं। कार्यकर्ताओं ने भाजपा के मेरठ में बने पश्चिम क्षेत्रीय कार्यालय पर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया

है। मेरठ में भाजपा की पुरानी शहर सीट पर इस बार पार्टी ने कमलदत्त शर्मा को टिकट दिया है। कमलदत्त शर्मा के विरोध में राज्यमंत्री सुनील भराला के समर्थक प्रदर्शन कर रहे हैं। इस सीट पर पंडित भराला की भी दावेदारी थी। बरेली में पूर्व मंत्री राजेश अग्रवाल के बेटे मनीष अग्रवाल को टिकट न मिलने से नाराजगी है। मंत्री के बेटे ने सोशल मीडिया पर नाराजगी जाहिर की है। सीट से संजीव अग्रवाल को टिकट मिला है, जो आरएसएस के खास हैं। बरेली के बिथरीचयनपुर सीट से राजेश मिश्रा उर्फ पप्पू भरतौल को टिकट न मिलने से खासा विरोध है।

चर्चा है कि पार्टी ने इस सीट से आरएसएस के नजदीकी होने के कारण डॉ. राघवेंद्र शर्मा को टिकट दिया है। गाजियाबाद में पूर्व एमएलए और मंत्री अतुल गर्ग को दोबारा टिकट मिलने के बाद क्षेत्र में विरोध शुरू हो गया है। मंत्री के खिलाफ लोगों ने पर्चे बांटे। लोगों का कहना है जो विधायक कोरोना काल में घर में बंद रहा, समाज के लिए कुछ काम नहीं कर सका, उसे टिकट देकर गलत किया है। बागपत से विरोध के वीडियो सोशल मीडिया पर डाले जा रहे हैं। इसमें ग्रामीण बीजेपी विधायक योगेश धामा पर गंभीर आरोप लगाकर विरोध कर रहे हैं।

उत्तराखंड चुनाव : खोया हुआ जनाधार वापस लाना बीएसपी के लिए बड़ी चुनौती

» पड़ोसी राज्य में कभी किंगमेकर रहीं थी मायावती

» मोदी लहर में हाथी नहीं चल सका एक कदम

» 2017 में बीजेपी ने बसपा के वोट बैंक पर लगाई थी सेंध

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। पिछली बार उत्तराखंड की सियासत में सपा भले ही खाता नहीं खोल सकी थी, लेकिन बसपा अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के साथ-साथ किंगमेकर की भूमिका भी अदा करती रही है। राज्य गठन के बाद शुरुआती तीन विधान सभा चुनाव में बीएसपी तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी, लेकिन मोदी लहर में एक भी सीट नहीं जीत सकी। उत्तराखंड के सियासी इतिहास में पहली बार था जब बसपा का हाथी पहाड़ पर रेंगता नजर आया था।

यही वजह है कि 2022 के चुनाव में बीएसपी अपने खोए हुए सियासी जमीन को वापस लाने की कवायद में जुटी है? बसपा ने उत्तराखंड की सभी 70 विधान सभा सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी में जुटी है। सूबे में बसपा के खोए हुए जनाधार को वापस लाने का जिम्मा पार्टी कोऑर्डिनेटर समशुद्दीन राइन को सौंपा गया है, जो इन दिनों कैंडिडेट के चयन को लेकर जुटे हैं। इस बार बसपा का फोकस राज्य में दलित-मुस्लिम वोटों के कैंबिनेशन को बनाने का है, लेकिन चुनाव जिस तरह से बीजेपी और कांग्रेस के बीच सिमटता जा रहा है। ऐसे में बसपा के लिए यह चुनाव काफी चुनौतीपूर्ण बन गया है। हालांकि, एक दौर में बसपा उत्तराखंड की सियासत में अहम रोल में रही है। राज्य के मैदानी ही नहीं बल्कि पहाड़ी क्षेत्र में भी अपना सियासी ग्राफ बढ़ाती नजर आ रही थी। लेकिन बसपा प्रमुख मायावती के सूबे में सक्रिय न होने से बसपा का सियासी ग्राफ गिरना शुरू हुआ तो फिर नहीं रुका। इसी का नतीजा रहा कि 2017 के विधानसभा चुनाव में बसपा एक भी विधायक अपना नहीं जिता सकी। जनाधार पाना बड़ी चुनौती है।

जब किंगमेकर बनी बसपा

2012 के विधान सभा चुनाव में बसपा 3 विधायकों पर सिमट गई। हालांकि, बसपा का मत प्रतिशत बढ़कर 12.99 फीसदी पर पहुंच गया। बसपा के 2012 के चुनाव भले तीन ही विधायक थे, लेकिन इस बार बसपा ने किंग मेकर की भूमिका निभाई और कांग्रेस के साथ गठबंधन कर सरकार में शामिल हुई थी। भगवानपुर से विधायक सुरेंद्र राकेश बसपा कोटे के कैबिनेट मंत्री भी बने, लेकिन बसपा अपने सियासी ग्राफ को मजबूत नहीं रख सकी।

मोदी लहर में हांफ गया था हाथी

2017 के विधान सभा चुनाव में बसपा का उत्तराखंड से सूपड़ा साफ हो गया। इस बार बसपा का एक भी विधायक जीतकर विधान सभा तक नहीं पहुंच पाया। 2017 की मोदी लहर में बसपा का हाथी उत्तराखंड पहाड़ के अलावा मैदानी इलाके में भी हांफता नजर आया। बसपा सीटें गंवाने के साथ-साथ वोट प्रतिशत भी घटकर आधा रह गया और महज 6.98 फीसदी वोट मिले। बसपा से बेहतर प्रदर्शन निर्दलियों के रहे, जिन्होंने मोदी लहर के बावजूद कुमाऊं और गढ़वाल से दो निर्दलीय विधायक जीतने में कामयाब रहे।

2002 में बसपा की दमदार दस्तक

उत्तराखंड में पहला चुनाव 2002 में हुआ, जिसमें बीजेपी, कांग्रेस और बसपा के बीच त्रिकोणीय मुकाबला हुआ। कांग्रेस 36 सीटों के साथ सरकार में आई तो बीजेपी ने 19 सीटों पर जीत दर्ज की थी। वहीं बसपा को 7 सीट जीत कर तीसरे नंबर पर रही। 2002 में बसपा का मत प्रतिशत 10.93 फीसदी रहा। 2007 के विधान सभा चुनाव में बसपा उत्तराखंड में बड़ी पार्टी के रूप में सामने आई। इस चुनावों में बसपा के 8 विधायक जीते और मत प्रतिशत बढ़कर 11.76 फीसदी हुआ। हरिद्वार और उधम सिंह नगर की अधिकांश सीटों पर बसपा का दबदबा था। इस दौरान पहाड़ पर भी कई सीटें ऐसी थीं, जिन पर बसपा की हार का आंकड़ा 2000 से कम रहा। बसपा के बढ़ते ग्राफ से कांग्रेस और बीजेपी की चिंता बढ़ गई थी।

अब डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा की सीट पर नजर, चर्चाओं का बाजार गर्म

» लखनऊ कैंट या उत्तर से चुनाव लड़ने की चर्चा गर्म

» आखिरी फैसले के लिए अभी करना होगा इंतजार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद भाजपा पूरी ताकत के साथ मैदान में उतर गयी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को मैदान में उतरने के बाद अब सबकी नजरें दूसरे डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा की सीट को लेकर गड़ गयी है। इसको लेकर भाजपा में मंथन जारी है। वहीं दिनेश शर्मा की सीट को लेकर चर्चाओं का बाजार भी गर्म हो चुका है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य की सीट फाइनल होने के बाद अब प्रदेश के तीसरे कद्दावर चेहरे उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा की सीट पर होना है। कार्यकर्ताओं के बीच कयास लग रहे हैं कि वह कैंट या उत्तर से ताल ठोक सकते हैं। इसकी वजह यह है कि कैंट ब्राह्मण बहुल सीट है। दोनों ही सीटों पर लगातार भाजपा का विजय रथ को सरपट दौड़ात रहा है। पूर्व से भाजपा के नगर विकास मंत्री आशुतोष टंडन की मजबूत दावेदारी है। ऐसे में कैंट और उत्तर की सीट से डिप्टी सीएम चुनाव मैदान में उतर सकते हैं।

महापौर रहने और उनसे लोगों का क्षेत्रीय समस्याओं के कारण सीधा संवाद-जुड़ाव होने के कारण भी उनकी राह यहां आसान भी होगी। चर्चा यह भी है कि उपमुख्यमंत्री पूर्व की सीट से भी अपना भाग्य आजमा सकते हैं। यह चर्चा तब छिड़ी जब सोशल मीडिया पर उनके लखनऊ उत्तर से प्रत्याशी होने की सूचना तेजी से वायरल होनी शुरू हुई। हालांकि भाजपा के लिए कैंट और पूरब क्षेत्र को अभेद किला माना जाता है। ऐसे में यह सीटें कार्यकर्ता सबसे उपयुक्त मान रहे हैं। पार्षद अनुराग मिश्र अन्नू का कहना है कि कैंट सीट मजबूत है। ब्राह्मण बहुल होने के साथ कार्यकर्ताओं के बीच उनकी इस इलाके में सीधी पैठ है। शहर का महापौर होने के कारण कार्यकर्ताओं से बातचीत है। ऐसे में कैंट सीट पर उनकी दावेदारी मजबूत बनती है। उत्तर सीट भी उनके लिए कमजोर नहीं है। पूर्व मंडल अध्यक्ष कौशल किशोर का मानना है कि वह शहर की किसी भी सीट से लड़ सकते हैं। इसमें कैंट सीट सबसे अहम होगी। उत्तर सीट पर भी उनकी दावेदारी कमजोर नहीं है। बस वह लड़ना कहां से चाहते हैं उन पर निर्भर करता है। चुनावी समर में कैंट सीट पर उनकी दावेदारी मजबूत बनती है। राष्ट्रीय कार्यक्रम एवं बैठक विभाग के नगर संयोजक सतीश मिश्र का अनुमान है कि वह कैंट या फिर उत्तर से मैदान में आ सकते हैं। तय संगठन को करना है। ऐसे में अभी थोड़ा इंतजार करना होगा। सूत्र बताते हैं कि वह फिलहाल चुनाव के लिए लड़ रहे कार्यकर्ताओं में जोश भरने के प्रदेश के विभिन्न जिलों का दौरा कर चुनावी समीकरण में अपनी उपयोगिता सार्थक करने में लगे हैं।

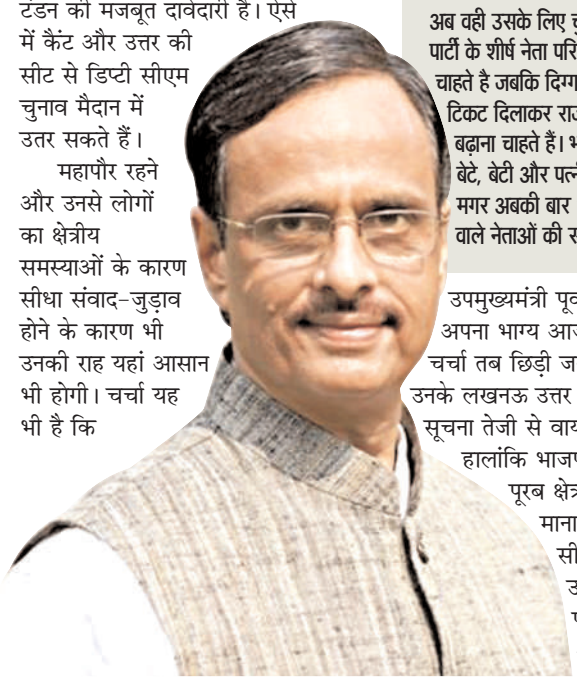

परिवारवाद बन रहा भाजपा की बड़ी चुनौती

भाजपा जिस परिवारवाद का विरोध करती रही है, अब वही उसके लिए चुनौती बनती जा रही है। पार्टी के शीर्ष नेता परिवारवाद के आरोप से बचना चाहते है जबकि दिग्गज नेता अपने बेटे, पत्नी को टिकट दिलाकर राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाना चाहते हैं। भाजपा पहले भी नेताओं के बेटे, बेटी और पत्नी को चुनाव लड़ा चुकी है, मगर अबकी बार 75 साल की उम्र पूरी करने वाले नेताओं की संख्या बढ़ने से पार्टी की मशक्कत बढ़ गई है। भाजपा के शीर्ष नेता इस बात को लेकर परेशान हैं कि यदि दिग्गज नेताओं के परिवारजन को टिकट दिया गया तो सामान्य कार्यकर्ता का हक मारा जाएगा और उनमें गलत संदेश जाएगा। वहीं, विपक्षी दलों को आरोप लगाने का अवसर मिल जाएगा। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र बेटे अमित मिश्रा के लिए देवरिया से टिकट मांग रहे है। वहीं बिहार के राज्यपाल फागू चौहान के बेटे रामविलास चौहान मऊ की मधुबन सीट से टिकट मांग रहे हैं। केंद्रीय राज्यमंत्री कौशल किशोर की पत्नी जय देवी मलिहाबाद से विधायक हैं। इस बार कौशल किशोर अपने बेटे विकास किशोर को महिलाबाद और दूसरे बेटे प्रभात किशोर को सीतापुर की सिधौली सीट से चुनाव लड़ाना चाहते हैं। इसके अलावा कानपुर नगर के सांसद सत्यदेव पचौरी अपने बेटे अनूप पचौरी के लिए कानपुर नगर की गोविंद नगर सीट से टिकट की मांग कर रहे हैं।

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

फिलीपींस से मिसाइल डील के मायने

हथियारों का आयातक भारत अब निर्यातक की भूमिका में आ गया है। भारत ने फिलीपींस से ब्रह्मोस मिसाइल की डील की है। इसके अलावा फिलीपींस जैसे कई अन्य देश भी भारत से हथियार खरीद रहे हैं। इसमें वे देश शामिल हैं जो चीन की विस्तारवादी नीति से परेशान हैं और उनका भारतीय युद्धक हथियारों पर भरोसा है। सवाल यह है कि क्या विभिन्न देशों से रक्षा सौदे कर भारत विश्व के हथियार बाजार में अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रहा है? इसका देश की अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ेगा? क्या हथियारों के निर्यात के जरिए भारत चीन को उसी की भाषा में जवाब दे रहा है? क्या फिलीपींस और वियतनाम को हथियार बेचकर भारत ने चीन पर कूटनीति बढ़त बना ली है? विश्व के तमाम देशों में भारतीय हथियारों की मांग क्यों बढ़ रही है? क्या आने वाले दिनों में भारत हथियारों के निर्माण में आत्मनिर्भर बन जाएगा?

भारत ने फिलीपींस के साथ 375 मिलीयन डॉलर यानी दो हजार 811 करोड़ का रक्षा समझौता किया है। इसके तहत फिलीपींस को भारत में बनी ब्रह्मोस मिसाइल दी जाएगी। साउथ चाइना को लेकर चीन और फिलीपींस में टकराव के हालात बने रहते हैं। चीन अपनी विस्तारवादी नीति के तहत उसे हड़पना चाहता है। लिहाजा चीन से निपटने के लिए फिलीपींस ने ब्रह्मोस मिसाइल का सौदा किया है। ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है और ये जमीन, हवा और समुद्र तीनों से मार करने में सक्षम है और इसको रडार भी नहीं पकड़ सकते हैं। वियतनाम, मलेशिया और इंडोनेशिया भी इस मिसाइल को खरीदने के लिए भारत के साथ बातचीत कर रहे हैं। इसके अलावा भारत वियतनाम के साथ भी सौ मिलीयन डॉलर यानी 750 करोड़ का रक्षा समझौता किया है। जिसके तहत वियतनाम को भारत में बनी 12 हाई स्पीड गार्ड बोट दी जाएगी। वियतनाम भी साउथ चाइना सी में स्थित है और चीन की नजर इस पर है। जाहिर है इन सौदों के जरिए भारत चीन को उसी की भाषा में जवाब दे रहा है जैसा चीन अभी तक करता आया है। दरअसल, चीन ने भारत को घेरने के लिए पिछले दो दशकों से बांग्लादेश, म्यांमार, पाकिस्तान, और श्रीलंका के साथ रक्षा समझौते कर उन्हें हथियार मुहैया करा रहा है। भारत की इस नीति से चीन को तगड़ा झटका लगा है। साथ ही इसके जरिए वह चीन को घेरने की रणनीति पर भी तेजी से काम कर रहा है। इसके अलावा हथियारों के निर्यात से न केवल अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी बल्कि रोजगार के साधन भी विकसित होंगे। इसके अलावा आने वाले दिनों में भारत विश्व के हथियार बाजार में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करा सकेगा।

भारत ने फिलीपींस से ब्रह्मोस मिसाइल की डील की है। इसके अलावा फिलीपींस जैसे कई अन्य देश भी भारत से हथियार खरीद रहे हैं। इसमें वे देश शामिल हैं जो चीन की विस्तारवादी नीति से परेशान हैं और उनका भारतीय युद्धक हथियारों पर भरोसा है। सवाल यह है कि क्या विभिन्न देशों से रक्षा सौदे कर भारत विश्व के हथियार बाजार में अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रहा है?

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

सीमा पर रोबोट आर्मी, अनमैंड व्हीकल्स

लक्ष्मी शंकर यादव

अभी हाल में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने सशस्त्र बलों के अत्याधुनिक प्रशिक्षण के लिए नया आदेश जारी कर दिया है। उद्देश्य है कि युद्ध लड़ने एवं उसे जीतने में सक्षम विशिष्ट चीनी बल तैयार रहने चाहिए। शी जिनपिंग ने अपने आदेश में कहा है कि सशस्त्र बलों को प्रौद्योगिकी तथा युद्ध तकनीकों के साथ अपने प्रतिद्वंद्वियों पर नजदीक से नजर रखनी चाहिए। इसके लिए क्रमबद्ध प्रशिक्षण को मजबूती प्रदान करनी चाहिए और विशिष्ट बलों के गठन के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकियों का विकास करना चाहिए जो युद्ध लड़ने में सक्षम हों। चीनी सेना का वार्षिक रक्षा बजट 200 अरब डॉलर अर्थात 14908 अरब रुपये है। चीन की इस सेना से निपटने की तैयारी भारत को करनी होगी।

सेंट्रल मिलिटरी कमीशन के प्रमुख के तौर पर पीएलए को 2022 में दिया गया राष्ट्रपति शी जिनपिंग का यह पहला आदेश है। यह आदेश हिन्द-प्रशान्त महासागर क्षेत्र, अमेरिका, जापान एवं अन्य पड़ोसी देशों के मद्देनजर सेना को आधुनिक बनाने के लिए है। दक्षिण चीन सागर और उसके बाद एशिया-प्रशान्त क्षेत्र में अमेरिका तथा उसके सहयोगियों की बढ़ती ताकत को देखते हुए चीन काफी दिनों से अपनी सैन्य ताकत बढ़ाने को तत्पर दिख रहा था। गौरतलब है कि हाल ही के वर्षों में इन क्षेत्रों को लेकर चीन के खिलाफ दो रणनीतिक गठबंधन क्वाड और ऑकस बने हैं, जिनमें अमेरिका व भारत की मौजूदगी है इसलिए चीन का चिन्तित होना स्वाभाविक है। भारत पर दबाव बनाने के उद्देश्य से चीनी सेना पूर्वी लद्दाख में एलएसी के पास पैंगोंग त्सो झील के अपने वाले हिस्से में एक पुल बना रही है। इस पुल के बन जाने से चीनी सेना किसी भी यौद्धिक स्थिति के उत्पन्न होने पर वह भारतीय सीमा के निकट शीघ्रता के साथ पहुंच जाएगी। अभी तक इस हिस्से में पहुंचने में चीनी सेना को 200 किलोमीटर का रास्ता तय करना पड़ता है। पुल के बन जाने से यह दूरी 40 से 50 किलोमीटर ही रह जाएगी। विदित हो कि पैंगोंग त्सो लेक की लम्बाई 135 किलोमीटर है।

स्थलीय सीमा से घिरी हुई इस झील का कुछ हिस्सा लद्दाख और बाकी हिस्सा तिब्बत में है। झील के उत्तरी तट पर फिंगर आठ से 20 किलोमीटर पूर्व में ब्रिज का निर्माण किया जा रहा है। ब्रिज साइट रुतोग काउंटी में खुर्नक जिले के ठीक पूर्व में है जहां पर पीएलए के अनेक सीमावर्ती ठिकाने हैं। अगस्त, 2020 में चीनी सेना पैंगोंग त्सो झील के फिंगर-4 तक आ

गई थी। करीब डेढ़ साल के तनाव के बाद चीनी सेना पीछे हटी लेकिन अब उसने अपनी तरफ पुल बनाना शुरू कर दिया है। सामरिक दृष्टिकोण से चीन इस पुल से भारतीय सेना की गतिविधियों पर निगरानी कर सकेगा। पीएलए ने इस पुल से आने-जाने के लिए सड़क बनाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। पूर्वी लद्दाख में पैंगोंग त्सो झील पर चीन द्वारा पुल बनाए जाने पर भारत ने स्पष्ट किया है कि यह निर्माण झील के उस हिस्से में किया जा रहा है जो एलएसी के पार बीते 60 सालों से चीन के अवैध कब्जे में है लेकिन भारत ने इस अवैध कब्जे को कभी स्वीकार नहीं किया है। भारत इस पर नजर बनाए हुए है और स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक उपाय कर रहा है। लद्दाख में अब भारतीय सेना के जवानों का सामना ठंड से कांपते चीनी सैनिकों के बजाय उसकी रोबोट आर्मी और अनमैंड व्हीकल्स से होगा क्योंकि चीन ने लद्दाख से लगती सीमा पर इनकी तैनाती कर दी है। चीन ने यह कार्य तिब्बत की कड़कड़ाती ठंड नहीं झेल पा रहे अपने सैनिकों के बचाव के लिए किया है। लद्दाख तनाव को कम करने के लिए भारत और चीन के बीच कई दौर की वार्ता के बाद भी कोई समाधान नहीं निकल सका है। दरअसल, पीएलए ने तिब्बत में ऑटोमैटिक रूप से चलने वाली 88 शॉर्प क्लॉ व्हीकल्स को तैनात कर दिया है। इसमें से 38 शॉर्प क्लॉ व्हीकल्स को लद्दाख सीमा पर लगाया गया है। इन गाड़ियों को चीन की हथियार निर्माता कम्पनी नोरीनको ने तैयार किया है। इन वाहनों का इस्तेमाल सीमा क्षेत्रों में शत्रु की निगरानी या अन्य क्षेत्रों में निगरानी के लिए किया जाता है। चीन ने तिब्बत में स्वचालित म्यूल-200 अनमैन्ड व्हीकल्स भी तैनात कर दिए हैं। ये वाहन मुश्किल पहाड़ी इलाकों में शत्रु की निगरानी करने के साथ-साथ 50 किलोमीटर की दूरी तक आक्रमण करने में भी सक्षम हैं। इस क्षमता के अलावा इनकी मदद से एक बार में 200 किलोग्राम से ज्यादा वजन का गोला बारूद और हथियारों को ले जाया जा सकता है। तिब्बत के इलाके में 200 लिंक्स ऑल टेरेन व्हीकल्स मौजूद हैं। इनमें से तकरीबन 150 लद्दाख सीमा क्षेत्र में हैं। इसके अलावा ये वाहन भारी वजन वाले हथियारों और एयर डिफेंस संबंधी हथियारों के लिए प्लेटफार्म के तौर पर भी काम आ सकते हैं।

अवांछित एप्लीकेशंस पर कानून से अंकुश

पवन दुग्गल

'बुल्ली बाई' एप मामले में मोबाइल फोन पर उपलब्ध होने वाली सामग्री में न केवल महिलाओं बल्कि समुदाय विशेष को निशाना बनाकर पेश करने वाली करतूतों ने यथेष्ट लगाम लगाने की जरूरत को पुन: रेखांकित किया है। इंटरनेट ने किसी दुनिया के एक हिस्से में बैठे रहकर दूसरे छोर के इंसानों तक पहुंच करने या किसी को निशाना बनाने की जुर्रत करने की सहूलियत इलेक्ट्रॉनिक सामग्री और मोबाइल एप्लीकेशंस के जरिए बना दी है। मोबाइल एप्लीकेशंस आज के समय की जरूरत बन गई हैं, लगभग हर कोई इन पर निर्भर है। 'बुल्ली बाई' एप मध्ययुगीन मानसिकता का एक जाहिर रूप है जब महिलाओं को बतौर निजी वस्तु की तरह खरीदा-बेचा जाता था।

ऑनलाइन नीलामी के जरिये कोई महिला एक वस्तु की भांति उपलब्ध है, वह विचार है जो आधुनिक सभ्यता के मूल्यों के नितांत खिलाफ है। हालांकि, तथ्य यह है कि इस तरह की सामग्री अभी भी किसी न किसी आनलाइन प्लेटफॉर्म पर होगी। गौर करने लायक सवाल यह है कि भारत का कानून इस बाबत कहां खड़ा है? फिलहाल भारत के पास विशेष तौर पर मोबाइल एप्लीकेशंस को लेकर नीति नहीं है। साइबर कानून के नाम पर भारत के पास ले-देकर इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी कानून-2000 है, जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से संबंधित हर दिशा-निर्देश की जननी है। वर्ष 2000 में जब यह कानून बना था तब मोबाइल फोन इसके अंतर्गत नहीं आते थे। लेकिन आईएटी (संशोधन) एक्ट 2008 में मोबाइल फोन समेत सभी प्रकार के संचार उपकरणों को इस कानून के दायरे में लाया गया। हालांकि, इस आईटी कानून के प्रावधानों को भी गहराई से पढ़ें तो इसमें अभी भी मोबाइल एप्लीकेशंस संबंधित कोई स्पष्ट नियम नहीं है। साफ है, कानून के अनुसार, एप्लीकेशंस बनाने वाले निर्माता या तमाम एप्लीकेशन स्टोर, जहां सब एप्लीकेशंस उपलब्ध होती हैं, उन्हें इंटरनेट सेवा प्रदान करने वाले सेवा-बिचौलिए की तरह लिया जाता है। इसमें आगे, यह वह वैध इकाइयां हैं जो अन्य लोगों के निमित्त, विशेष इलेक्ट्रॉनिक रिकार्ड को प्राप्त-भण्डारण-संप्रेषित कर सकते हैं। हालांकि, सरकार के पास आईटी एक्ट के अनुच्छेद 87 में सेवा-बिचौलियों से यथेष्ट सावधानी बरतवाने संबंधी अनेक मापदंड लागू करवाने की शक्ति है, किंतु मोबाइल एप्लीकेशंस के संदर्भ में आज तक इसका इस्तेमाल नहीं हुआ। दरअसल, अब इस देश में तमाम सेवा-बिचौलियों को, यदि संबंधित कानूनन जिम्मेवारी में संवैधानिक छूट चाहिए तो उन्हें केवल अनुच्छेद 79 के प्रावधानों के तहत अपने फर्ज को अंजाम देते समय यथेष्ट सावधानी रखना अनिवार्य है। जहां केंद्र सरकार ने सेवा-बिचौलियों के लिए माकूल सावधानी बरतने संबंधी नियम-कानून बनाए हैं, वहीं मोबाइल एप्लीकेशंस और इनको होस्ट करने वाले एप्लीकेशन प्लेटफॉर्म्स के व्यवहार संबंधी अलग से नियम बनाने के बारे में विचार नहीं किया गया। यहां तक कि इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (इंटर मीडिएट्री गाइड लाइंस एंड डिजिटल मीडिया एथिक्स कोड) रूल्स-2021 में भी मोबाइल एप्लीकेशंस के लिए अलग से दिशा-निर्देश नहीं हैं। अब तक हमने यही देखा है कि किसी अवांछित एप्लीकेशंस पर केंद्र सरकार की प्रतिक्रिया यही होती है कि आईटी एक्ट 69-ए के तहत प्राप्त शक्ति का प्रयोग कर उसको ब्लॉक करवा दे। नतीजतन, पिछले सालों के दौरान सरकार ने कई मोबाइल एप्लीकेशंस को प्रतिबंधित किया है। हाल ही में कई चीनी एप्लीकेशंस को भारतीय डिजिटल अधिकार क्षेत्र में ब्लॉक किया गया है लेकिन यह उपाय कभी भी जादुई गोली सिद्ध नहीं हुए क्योंकि जैसे ही आपने इन्हें ब्लॉक किया वहीं उत्सुकतावश लोग इनकी ओर खिंचते हैं, परिणामस्वरूप इन प्रतिबंधित मोबाइल एप्लीकेशंस की ओर इंटरनेट ट्रैफिक और अधिक मुड़ जाता है। आप किसी एप्लीकेशन को भारतीय अधिकार क्षेत्र में ब्लॉक कर भी दें, फिर भी भारत के उपभोक्ताओं की इन तक पहुंच वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क के जरिए बरकरार रहती है इसलिए इस किस्म की किसी मोबाइल सामग्री को प्रतिबंधित करने की बजाय मुल्कों को अवांछित सामग्री से निपटने को नूतन तरीका अपनाना पड़ेगा। भारत के संदर्भ में, देश के अधिकार क्षेत्र में मोबाइल एप्लीकेशंस पर नियंत्रण करने को एक अच्छा उपाय है, एक विस्तृत कानूनी ढांचा बनाना, साथ ही न्यूनतम मानदंड निर्धारण करना, जिनका पालन करना-करवाना प्रत्येक मोबाइल एप्लीकेशन निर्माता और इनको अपने प्लेटफॉर्म पर जगह देने वालों के लिए अनिवार्य हो।

उम्मीद है 'बुल्ली बाई' और अन्य मामले सरकार को मोबाइल एप्लीकेशंस पर उपलब्ध सामग्री पर अंकुश रखने के लिए अलग से नया कानून बनाने के लिए उत्प्रेरित करेंगे। आम उपभोक्ताओं की समझ एवं जागृति का स्तर बढ़ाने को सरकार प्रचार अभियान चलाए ताकि वे बहकने न पाएं। तकनीक और कानून के बीच सदा ही प्रतिस्पर्धा रही है और तकनीक अक्सर कानून से दस कदम आगे रहती है। इसलिए अब जबकि मोबाइल तकनीक और एप्लीकेशंस ने अच्छी-खासी प्रौढ़ता प्राप्त कर ली है, तो ऐसे यथेष्ट कदम उठाना भी लाजिमी हो जाता है, जिससे कि अवांछित एप्लीकेशंस द्वारा पेश मौजूदा चुनौतियों से निपटने को भारतीय कानून के ढांचे में सुधार हो।

सर्दियों में स्वाद ही नहीं, सेहत को भी बेहतर बनाती है गजक

सर्दियों के मौसम में अगर गजक खाने का आनंद न लिया जाये तो सर्दी का सीजन ही बेकार सा लगता है। सर्दी में गजक खाना बहुत लोगों को पसंद भी होता है। लेकिन गजक को लोग केवल स्वाद के लिए ही खाना पसंद करते हैं। जबकि गजक केवल स्वाद को ही बेहतर नहीं बनाती है। ये सेहत के लिए भी कई तरह से फायदेमंद होती है। अगर अभी तक आप गजक खाने के फायदों से अनजान हैं। तो आज हम आपको बताते हैं कि गजक खाने से सेहत को क्या-क्या फायदे मिलते हैं। आइये जानते हैं गजक के फायदों के बारे में।

हड्डियां मजबूत होती हैं

गजक खाने से हड्डियां मजबूत बनती हैं। दरअसल, गजक गुड़ और तिल को मिलाकर बनाई जाती है, इस वजह से इसमें काफी मात्रा में कैल्शियम पाया जाता है। जो हड्डियों को मजबूती देने का काम करता है। इतना ही नहीं गजक अर्थराइटिस की दिक्कत को दूर करने में भी मदद करती है।

मिलती है एनर्जी

गजक खाने से एनर्जी मिलती है क्योंकि तिल और गुड़ तो एनर्जी देते ही हैं। साथ ही कई तरह की गजक में ड्राई फ्रूट का इस्तेमाल भी किया जाता है। जो वीकनेस दूर करके बॉडी को एनर्जी देने में मदद करते हैं।

ब्लड प्रेशर होता है कंट्रोल

गजक खाने से ब्लड प्रेशर भी कंट्रोल में रहता है। गजक में मौजूद तिल सिसामोलिन से भरपूर होते हैं, जो ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मददगार साबित होते हैं।

पाचन क्रिया होती है बेहतर

गजक खाने से पाचन क्रिया बेहतर होती है। दरअसल, गजक में फाइबर काफी मात्रा में होता है, जो पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद करता है। इसके साथ ही कब्ज और गैस जैसी दिक्कतें भी दूर होती हैं।

एनीमिया की दिक्कत होती है दूर

गजक में भरपूर मात्रा में आयरन पाया जाता है। जिसके चलते गजक खाने से एनीमिया की दिक्कत दूर होती है। जिससे थकान और कमजोरी से भी निजात मिलती है।

स्किन ग्लोइंग बनती है

गजक खाने से स्किन में भी ग्लो आता है। इसकी वजह है गजक में मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट, जिंक और सेलेनियम जैसे तत्व जो स्किन को यंग बनाने में मदद करते हैं। इससे फाइन लाइंस भी कम होती हैं।

बॉडी को गर्माहट मिलती है

गजक खाने से बॉडी को गर्माहट भी मिलती है। क्योंकि तिल और गुड़ दोनों ही चीजों की तासीर गर्म होती है। इसी वजह से इसका सेवन सर्दियों के मौसम में किया जाता है।

हंसना मना है

संता पुलिस में भर्ती हो गया उसने इंस्पेक्टर को फोन लगाया - साहब यहां एक औरत ने अपने पति को गोली मार दी है, इंस्पेक्टर - क्यों? संता - जी उसका पति पोंछा लगे हुए गीले फर्श पर चलने लगा था इंस्पेक्टर - तो तुमने उस औरत को गिरफ्तार किया? संता - जी नहीं, अभी फर्श सूखी नहीं है...!!!

पप्पू ने अपने बाप को तमाचा मारा। पड़ोसी - अरे आपका बेटा आप पर ही हाथ उठा देता है बापू-क्या करूं ये अपनी मां पर गया है पड़ोसी बेहोश!!!

जीजा अपनी साली के साथ चैटिंग कर रहा था जीजा - वाह तुम तो अपनी बहन से भी ज्यादा सुन्दर हो साली - जीजू आप बड़े वो हो जीजा - अच्छा ये तो बताओ तुम इतनी सुंदर कैसे हो आखिर क्या इस्तेमाल करती हो ? साली फोटोशॉप ? जीजा बेहोश!!!

संता - भाई कल सर्कस देखने चलेंगे बंता - मैं अपनी बीवी को भी लाऊंगा संता-अगर तेरी बीवी और साली दोनों शेर के पिंजरे में गिर गयी तो किसे बचाएगा बंता- भाई मैं तो शेर को बचाऊंगा, आखिर दुनिया में शेर बचे ही कितने हैं!!!

पत्नी सब्जी लेते समय पति से बोली - पत्नी -2 किलो मटर ले लूं ? पति -ले लो..पत्नी-मैं तुम्हारी राय नहीं मांग रही हूं, पूछ रही हूं, क्या छील लोगे इतनी? पति बेहोश...

कहानी — रंग-बिरंगी मिठाइयां

वसंत ऋतु छाई हुई थी। राजा कृष्णदेव राय बहुत ही खुश थे। वह तेनालीराम के साथ बाग में टहल रहे थे। वह चाह रहे थे कि एक ऐसा उत्सव मनाया जाए, जिसमें उनके राज्य के सारे लोग शामिल हों। पूरा राज्य उत्सव के आनंद में डूब जाए। इस विषय में वह तेनालीराम से भी राय लेना चाहते थे। तेनालीराम ने राजा की इस सोच की प्रशंसा की और इसके बाद राजा ने विजयनगर में राष्ट्रीय उत्सव मनाने का आदेश दे दिया। शीघ्र ही नगर को स्वच्छ करवा दिया गया। सड़कों व इमारतों में रोशनी की व्यवस्था कराई गई। पूरे नगर को फूलों से सजाया गया। सारे नगर में उत्सव का वातावरण था। इसके बाद राजा ने घोषणा की कि राष्ट्रीय उत्सव मनाने के लिए हलवाई की दुकानों पर रंग-बिरंगी मिठाइयां बेची जाएं। घोषणा के बाद नगर के सारे हलवाई रंगीन मिठाइयां बनाने में व्यस्त हो गए। इस घोषणा के बाद कई दिनों तक तेनालीराम दरबार में नजर नहीं आए। किसी को भी उनके बारे में कुछ नहीं पता था। राजा कृष्णदेवराय ने तेनालीराम को ढूंढने के लिए सिपाहियों को भेजा, लेकिन वे भी तेनालीराम को नहीं ढूंढ पाए। उन्होंने राजा को इस बारे में बताया। यह सुनकर राजा और भी अधिक चिंतित हो गए। उन्होंने दोबारा सिपाहियों को तेनालीराम की खोज में जुट जाने का आदेश दिया। कुछ दिनों बाद सैनिकों ने तेनालीराम को ढूंढ निकाला। वापस आकर उन्होंने राजा को बताया, 'महाराज, तेनालीराम ने तो कपड़ों की रंगाई की दुकान खोल ली है। वह सारा दिन अपने इसी काम में व्यस्त रहते हैं। जब हमने उन्हें अपने साथ आने को कहा तो उन्होंने आने से मना कर दिया।' यह सुनकर राजा को गुस्सा आ गया। वह सैनिकों से बोले,'मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि तेनालीराम को जल्दी से जल्दी पकड़कर यहां ले आओ। अगर वह तुम्हारे साथ अपनी मर्जी से न आए तो उसे बलपूर्वक लेकर आओ।'राजा के आदेश का पालन करते हुए सैनिक तेनालीराम को बलपूर्वक पकड़कर दरबार में ले आए। राजा ने पूछा, 'तेनाली, तुम्हें लाने के लिए जब मैंने सैनिकों को भेजा तो तुमने शाही आदेश का पालन क्यों नहीं किया? और एक बात और बताओ। हमारे दरबार में तुम्हारा अच्छा स्थान है, जिससे तुम अपनी सभी आवश्यकताएं पूरी कर सकते हो। फिर भला तुमने यह रंगरेज की दुकान क्यों खोली?' तेनालीराम बोले,'महाराज, दरअसल मैं राष्ट्रीय उत्सव के लिए अपने कपड़ों को रंगना चाहता था। नगर में बहुत सारे लोग उत्सव में पहनने के लिए अपने कपड़े रंगवाना चाहते हैं। इस काम में अच्छी कमाई है। इससे पहले कि सारे रंगों का इस्तेमाल दूसरे लोग कर लें, मैं रंगाई का काम पूरा कर लेना चाहता था। सभी रंगों के इस्तेमाल से तुम्हारा क्या मतलब है? क्या नगर के सारे लोग अपने कपड़ों को रंग रहे हैं?' राजा ने पूछा। नहीं महाराज, वास्तव में रंगीन मिठाइयां बनाने के आपके आदेश के बाद हलवाई मिठाइयों को रंगने के लिए रंग खरीदने में व्यस्त हो गए हैं।

10 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — पिछले कुछ वर्षों से जिन परेशानियों से जूझ रहे थे, वे दूर होने वाली हैं। घर, उद्योग, करियर, फाइनेंस समेत हर क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलेगी, मकान भी खरीद सकते हैं। प्रमोशन के अवसर प्राप्त होंगे।

वृषभ — इस साल शुक्र आप पर बहुत सारे विकल्पों की बारिश कर रहा है। यह साल आपको ऊर्जा, प्रेरणा और शिक्षा प्रदान करेगा। नौकरी के कारण, विभिन्न स्थानों की यात्रा करने की आवश्यकता हो सकती है।

मिथुन — नया साल किसी वरदान से कम नहीं होगा। शिक्षा के नये रास्ते खुलेंगे। मकान व भूमि खरीद सकते हैं। नया वाहन भी आएगा। पुराने निवेश से इस वर्ष बड़ा लाभ अर्जित करेंगे। गणेशजी की आराधना करें।

कर्क — नया वाहन खरीदने का मौका मिलेगा। बिजनेस बढ़ाने के लिए आपको थोड़ी यात्रा करनी पड़ सकती है। किसी अच्छी कंपनी से जुड़ने का मौका मिलेगा। वैवाहिक जीवन में बिगड़ी हुई चीजें सही रास्ते पर आ सकती हैं।

सिंह — जून में नौकरी बदलने का मन करेगा और जुलाई के मध्य से आपको उसके लिए नये प्रस्ताव मिलने शुरू हो जाएंगे। इस साल संपत्ति खरीद सकते हैं या कुछ बड़ा लाभ कमा सकते हैं।

कन्या — लंबे समय से संतान के इच्छुक जातकों की इच्छा पूरी होगी। पदोन्नति का अवसर प्राप्त होगा। नौकरीपेशा लोगों को अच्छा पद मिलेगा। जीवनसाथी के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा पर जा सकते हैं।

तुला — जमीन से फायदा मिलेगा। सरकारी क्षेत्र में कोई अच्छी नौकरी मिलने का योग बनेगा। अपना बिजनेस कर रहे हैं तो इस साल कोई अच्छी डील मिलेगी। संतान सुख की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक — कुछ नये काम करने का विचार करेंगे। साल के मध्य तक आपको अच्छी नौकरी की प्राप्ति होगी। नौकरीपेशा लोगों को अच्छे कार्यों की वजह से पदोन्नति के अवसर मिलेंगे।

धनु — नया कारोबार स्थापित करने में कामयाब होंगे। सेवा क्षेत्र से जुड़ा व्यवसाय करने वालों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने को अगस्त बेहतर महीना रहेगा।

मकर — यह साल नयी ऊंचाइयों पर ले जाएगा। बृहस्पति का आशीर्वाद बना रहेगा। मनचाहा वर या वधू पाने के लिए अभी थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा। नौकरीपेशा लोगों को विशेष लाभ के अवसर मिलेंगे।

कुम्भ — इस वर्ष पारिवारिक जरूरतों और मांगलिक प्रसंगों पर खर्च अधिक होगा, लेकिन आय भरपूर रहने से परेशानी नहीं आएगी। कृषि भूमि और कृषि संबंधित कार्यों से लाभ कमाएंगे।

मीन — छात्रों को साल शुरू होते ही खुशखबरी मिलेगी। नौकरी ढूंढ रहे युवाओं के लिए भी अच्छी खबर आएगी। प्रतियोगी परीक्षाओं के एग्जाम देते रहें। इस साल दांपत्य जीवन बहुत शानदार रहने वाला है।

बालीवुड | मन की बात

इस साल रोमांटिक हीरो की लगेगी हैट्रिक : ताहिर राज

फिल्म मर्दानी से बॉलीवुड में दस्तक देने वाले ऐक्टर ताहिर राज भसीन इस साल ओटीटी पर हैट्रिक मार रहे हैं। इस साल उनके तीन प्रोजेक्ट ये काली काली आंखें, रंजिश ही सही और लूप लपेटा तीसरे पर्दे यानी ओटीटी पर दर्शकों को लुभाएंगे। गुरुवार को ही लूप लपेटा का ट्रेलर भी आया है। बीते दिनों ताहिर फिल्म 83 में महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर के किरदार में भी नजर आए। ताहिर ने अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट्स को लेकर ढेर सारी बातें कीं। वह कहते हैं कि इस साल 2022 में वह रोमांटिक हीरो के रोल में हैट्रिक लगाने वाले हैं। ताहिर राज भसीन ने कहा, मेरे लिए 2022 बहुत ही स्पेशल है, क्योंकि इस साल ओटीटी पर मेरे तीन प्रॉजेक्ट आ रहे हैं। इनमें मैं पहली बार रोमांटिक हीरो के रोल में हूं। रोमांटिक ड्रामा एक ऐसा जॉनर है, जो मैंने ज्यादा नहीं किया है, लेकिन इस साल रोमांटिक हीरो के रूप में मेरी हैट्रिक हो गई है, क्योंकि ये काली काली आंखें, रंजिश ही सही और लूप लपेटा तीनों ही रोमांटिक ड्रामा हैं। इनमें ये काली काली आंखें रोमांटिक ड्रामा तो है, लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, ये साइकोलॉजिकल थ्रिलर में बदल जाती है। ओटीटी की खास बात ये है कि जब आपको एक रोल आठ एपिसोड में निभाने को मिलता है, तो आप उस किरदार को और गहराई से निभा पाते हैं। ओटीटी पर ये मौका मुझे पहली बार मिला है। रंजिश ही सही एक डायरेक्टर, उसकी पत्नी और एक मशहूर ऐक्ट्रेस के बीच लव ट्रांएगल है, जो 70 के दशक में सेट है। उसकी जर्नी भी बहुत मजेदार रही और लूप लपेटा के लिए तो मैं बहुत एक्साइटेड हूं। ये फिल्म एक लूट पर है, जिसमें मैं तापसी पन्नू के साथ रोमांटिक रोल में हूं।

पैन इंडिया फिल्मों में नजर आएंगे सुपरस्टार राम चरण

मेगा स्टार राम चरण का मानना है कि हमारी एक ही भाषा है और वो है सिनेमा की भाषा। जब से राम चरण ने फिल्म आरआरआर के लिए अपना प्रचार शुरू किया, तब से उनके प्रशंसक और दर्शक समान रूप से उनके स्टाइलिश और सौम्य व्यवहार और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उनके इंटेलिजेंस से प्रभावित हैं। हर अपीयरेंस, इंटरव्यू और टॉक शो में उन्होंने दर्शकों के मन पर एक स्थायी छाप छोड़ी है कि राम चरण, पैन इंडिया स्टार हैं।

उनकी आने वाली सभी फिल्मों आरआरआर, आरसी 15, आरसी 16 के पैन इंडिया होने के नाते, राम चरण लोगों के बीच एक तथ्य को मजबूत करने में सफल रहे हैं। वह यह है कि देशभर में केवल एक ही आम भाषा है और वह है सिनेमा की भाषा।

एक दिलचस्प इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा कि, आरआरआर उतनी ही एक हिंदी फिल्म भी है, जितनी यह एक तेलुगु फिल्म है। यह अखिल भारतीय फिल्म है। आज बहुत सारे फिल्म निर्माता, विशेष रूप से राजमौली के प्रयासों के लिए चलते इस इंडस्ट्री के द्वार खुल गए हैं।

उन्होंने आगे कहा, हम सिर्फ रीजनल तक सीमित नहीं रहे। हम अब एक बड़ी भारतीय फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा बन गए हैं। बाधाएं टूट गई हैं। इसलिए जैसे भी कोई मौका मिलेगा, मैं हर फिल्म करूंगा। आरआरआर एक बड़े पैमाने की फिल्म है और यह कई भाषाओं में रिलीज होकर सारे बैरियर को तोड़ने वाली है और यह बेहद खुशी की बात है। फिल्म आरआरआर को देखने के लिए फैन बेसब्र हैं। इस फिल्म में राम चरण के साथ आलिया भट्ट की जोड़ी जमी है। दोनों पहली बार पर्दे पर साथ नजर आएंगे। फिल्म में साउथ स्टार जूनियर एनटीआर एक मजबूत रोल निभा रहे हैं। साथ ही अजय देवगन और श्रिया सरन भी फिल्म में अहम रोल निभाते नजर आएंगे।

टिप टिप बरसा पानी गाने पर श्वेता महारा ने धमाकेदार डांस से कैटरीना को दी टक्कर

भोजपुरी | गपशप

इन दिनों भोजपुरी एक्ट्रेस श्वेता महारा सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं। श्वेता की सोशल मीडिया पर जबरदस्त फैन फॉलोइंग हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपना एक डांस वीडियो शेयर किया। वीडियो इंटरनेट पर आते ही ताबड़तोड़ वायरल हो गया हैं। श्वेताने अपने जोरदार डांस से सबको दीवाना बना दिया हैं। दरअसल, मिस महारा ने इस वीडियो को अपने इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया है। वायरल वीडियो में श्वेता ब्लैक कलर की साड़ी में कैटरीना कैफ और अक्षय कुमार के सुपरहिट गाने टिप टिप बरसा पानी गाने पर डांस करती नजर आ रही हैं। ब्लैक साड़ी में एक्ट्रेस काफी हॉट लग रही हैं। श्वेता के डांस मूव्स को देख उनके फैंस तो जैसे पागल हुए जा रहे हैं। भोजपुरी दर्शक हो या हिंदी, हर कोई इस वीडियो की जमकर तारिफ कर रहा है। इस रील पर अबतक हजारों लाइक आ चुके हैं। लोग इस वीडियो पर जमकर कमेंट भी कर रहे हैं। कुछ यूजर ने तो श्वेता की तुलना कटरीना कैफ से कर दी और लिखा, आप कैटरीना कैफ से ज्यादा हॉट दिख रही हो। वर्कफ्रंट की बात करें तो हाल ही में श्वेता महारा का एक वीडियो सॉन्ग रिलीज हुआ था, जिसमें वो नीलकमल सिंह के साथ धमाल मचाती देखी गई थी।

अजब-गजब | भयंकर ठंड में भी नहीं हिली कब्र से

मालिक के मौत के 2 महीने बाद भी कब्र छोड़ने को तैयार नहीं बिल्ली!

इंसानों और जानवरों के बीच बेहद खास रिश्ता होता है। जब कोई किसी जानवर को प्यार से पालता है तो वह उसका वफादार हो जाता है। कुत्ते को सबसे वफादार माना गया है। हालांकि एक बिल्ली ने भी वफादारी की मिसाल पेश की है। यह बिल्ली सर्बिया की है। इस बिल्ली ने मरने के बाद भी अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ा। यह बिल्ली अपने मालिक की कब्र के पास ही बैठी रहती है। यहां तक की भयंकर ठंड में भी यह बिल्ली वहां से नहीं हिली। एक ट्विटर यूजर लेवेडर ने पिछले साल नवंबर में एक ट्वीट किया था। इसमें यूजर ने एक बिल्ली की तस्वीर पोस्ट की थी। फोटो में बिल्ली अपने मालिक की कब्र के पास बैठी नजर आ रही थी। इस पोस्ट में लेवेडर ने बताया था कि कि शेख मुआमेर जुकरोली की 6 नवंबर 2021 को मौत हुई थी। मगर उसकी बिल्ली अंतिम संस्कार के बाद भी अपनी मालिक के कब्र के पास से हटने को तैयार नहीं थी। लेवेडर ने बताया था कि वह बिल्ली या तो वहीं टहलती रहती है या फिर कब्र पर बैठी नजर आ जाती

है। मरने के बाद भी वो अपने मालिक के पास रहना चाहती है। तस्वीर में दिखाई दे रही सफेद और भूरे रंग की बिल्ली कब्र के पास बैठी नजर आ रही थी। हैरानी की बात यह है कि यह बिल्ली दो महीने के बाद भी अपने मालिक की कब्र के पास ही बैठी है। दरअसल, लेवेडर ने अपडेट के तौर पर एक नई फोटो शेयर की है। इस तस्वीर में वही बिल्ली ठिठुरती ठंड में भी मालिक के कब्र के पास बैठी दिख रही है। फोटो के साथ कैप्शन में लिखा,मुआमेर की बिल्ली अभी भी यहीं है। यानी 2 महीने बाद भी बिल्ली कब्र के पास से डटी नहीं है। लेवेडर की पोस्ट देख यूजर्स हैरत में पड़ गए हैं। इस पोस्ट को 63 हजार से ज्यादा लोगों ने लाइक किया है जबकि 20 हजार से ज्यादा लोग इसे रीट्वीट कर चुके हैं। साथ ही लोग कमेंट कर हैरानी भी जता रहे हैं क्योंकि आमतौर पर बिल्लियों को इतना वफादार नहीं माना जाता है।

एक यूजर ने लिखा, अजीबोगरीब है क्योंकि बिल्लियां कुत्तों की तरह केयर नहीं करतीं। वहीं अन्य यूजर ने कमेंट किया,बिचारी बिल्ली को शख्स का अंतिम संस्कार नहीं दिखाना चाहिए था। वो अब हमेशा वहां आती रहेगी।

मौत के 1 साल बाद शख्स को हो गया कोरोना, पुलिस के उड़ गए होश!

निकोलस रॉसी को मौत के बाद कोरोना ने अपनी चपेट में लिया तो हर कोई हरकत में आ गया। दरअसल, निकोलस जिसकी 2020 में कोविड से मौत हो गई थी उसे अब फिर से कोरोना हो गया। जिसके बाद वो जिंदा हो गया। पता चला कि उसे मौत के बाद एक बार फिर कोरोनावायरस ने अपनी चपेट में ले लिया है। ये खबर बेहद चौंकाने वाली थी। लिहाजा मृतक को देखने के लिए एक टीम वहां पहुंची जिसके होश उड़ गए। बेहद हैरान करने वाली घटना स्कॉटलैंड की है। कोरोना महामारी ने जिस तरह पूरी दुनिया में तबाही मचाई उसने न सिर्फ कई परिवारों की खुशियां छीनी बल्कि बड़े-बड़े स्टार-सुपरस्टार यहां तक की हर देश की आर्थिक स्थिति भी चरमरा गई। इस आपदा में रोजी-रोटी का संकट खड़ा हुआ तो हमारे प्रधानमंत्री ने 'आपदा में अवसर' तलाशने की सलाह दी जिसने कई लोगों की जिंदगी बदल दी। मगर भारत के क्रू की सलाह का असर मीलों दूर स्कॉटलैंड में भी होगा किसी ने नहीं सोचा था। निकोलस रॉसी ने भी आपदा को अवसर में बदलकर खुद को कानून की सजा सा बचा लिया। जिस निकोलस रॉसी को एक बार मरने से पहले, एक बार मरने के बाद यानि दो-दो बार कोविड ने अपनी चपेट लिया था। वो साल भर तक मौत के आगोश में रहा और जब फिर कोरोना ने जकड़ा तो वो जी उठा। दरअसल उसने ये सारी कहानी पुलिस की गिरफ्त से बचने के लिए बुनी थी। 2020 में परिवार की तरफ ये जानकारी दी गई की उन्हें कोरोना हो गया था जिससे उनकी मौत हो गई। पुलिस ने भी उसे मरा मानकर तलाश छोड़ दी। हालांकि खुद रॉसी के वकील को इस बात पर भरोसा नहीं था। मगर पत्नी की बात पर सवाल करना उसे ठीक नहीं लगा तो वो भी सहमत हो गया। निकोलस रॉसी में 2008 में यौन उत्पीड़न और 2018 में एक हमले के मामले में वांछित था। पुलिस उस तक पहुंच पाती उससे पहले ही उसने फरवरी 2020 में कोविड से मौत का फर्जीवाड़ा रच डाला। लेकिन उसकी ये चाल तब बेनकाब हो गई जब उसके ग्लासगो में होने की खबर मिली। यहां वो आर्थर नाइट के नाम से रह रहा था और एक अस्पताल में कोरोना का इलाज करवा रहा था। फिलहाल निकोलस रॉसी को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। यूटा काउंटी अटॉर्नी कार्यालय रॉसी को वापस यूटा में प्रत्यर्पण के लिए संघीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ काम कर रहा है। उसके खिलाफ पुलिस के पास फिंगर प्रिंट और ष्ह्व के काफी सबूत भी मौजूद हैं। सोशल नेटवर्किंग की दुनियां में जहां सब कुछ आपकी मुट्ठी में है वहां पहचान छुपाकर लंबे समय तक रहना मुमकिन नहीं होता।

शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय: राज्यपाल तक पहुंचा महिला अधिकारी के उत्पीड़न का मामला, हड़कंप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। डॉ. शंकुतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्व विद्यालय में बेहद सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां की एक महिला अधिकारी ने एक प्रोफेसर और तीन उच्च अधिकारियों पर यौन उत्पीड़न और मानसिक प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज करवाने के बाद अब राज्यपाल आनंदी बेन पटेल से मुलाकात कर मामले की शिकायत की है। साथ ही राज्यपाल से न्याय की गुहार लगायी है। महिला अधिकारी की शिकायत के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन बौखला गया है और अब पीड़िता के खिलाफ ही कार्रवाई की तैयारी कर रहा है।

महिला अधिकारी ने राज्यपाल को दिए पत्र में विश्वविद्यालय के कुलसचिव अमित कुमार सिंह, परीक्षा नियंत्रक अमित कुमार राय, उप कुलसचिव एके सिंह और प्रोफेसर हिमांशु शेखर झा पर यौन उत्पीड़न और मानसिक उत्पीड़न का आरोप लगाया है। महिला

» महिला अधिकारी ने विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर और तीन अधिकारियों पर लगाया आरोप

» शिकायत से बौखलाया विश्वविद्यालय प्रशासन पीड़िता के खिलाफ ही कार्रवाई की कर रहा तैयारी

अधिकारी पूर्व में इनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करा चुकी हैं। इसके अलावा शिकायतकर्ता ने मुख्यमंत्री, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, उत्तरप्रदेश महिला आयोग, दिव्यांग अधिकारिता विभाग को भी शिकायत पत्र भेजा है और निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है। महिला अधिकारी का आरोप है कि उसे पिछले तीन वर्ष से प्रताड़ित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जब चीजें असहनीय हो गईं तो उन्होंने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम के तहत आंतरिक शिकायत समिति के माध्यम से जांच का अनुरोध जुलाई में किया था और एक शिकायत पत्र विश्वविद्यालय प्रशासन को दिया। विश्वविद्यालय ने यह मामला पुरानी समिति को सौंप दिया जिसका पूरा कार्यकाल खत्म हो चुका था। इसका उन्होंने विरोध किया लेकिन विश्वविद्यालय प्रशासन ने एक भी न सुनी। इसके बाद उन्होंने उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया जिसके निर्देश के बाद एक नई आंतरिक शिकायत समिति का गठन हुआ लेकिन कमेटी में छः में से पांच या बॉस थे या आरोपी के मित्र थे। इसका मैंने विरोध किया लेकिन मेरी एक भी न सुनी गयी। वहीं जिन चारों लोगों पर महिला अधिकारी ने आरोप लगाया है, उन्होंने इसे गलत बताया है। हालांकि, उन्होंने कोई भी आधिकारिक बयान देने से मना कर दिया है और कहा कि इस संबंध में कुलपति राणा कृष्ण पल सिंह से मिलें।

क्या कहना है पीड़िता का

“महिला अफसर का कहना है कि जांच समिति ने मुझे इतना समय भी नहीं दिया कि आरोपियों के जवाबों पर जिरह कर सकूं। नवंबर में जांच समिति ने आरोपियों को क्लीन चिट दे दी। इसके बाद मैंने कुलपति से इस पर पुनर्विचार की अपील की लेकिन उन्होंने मना कर दिया। उन्होंने मेरे कार्यस्थल का सीसीटीवी फुटेज देने से भी इंकार कर दिया। ये फुटेज मामले से पर्दा हटा देंगे। उन्होंने कहा कि मेरी शिकायत के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने मेरे पीएचडी दाखिले को गलत ठहराया जबकि कई वर्षों से वह फीस जमाकर रही थी। उसके बाद उनकी नौकरी को लेकर सवाल खड़े किए जबकि कुलसचिव न्यायालय में लिखकर दे चुके हैं कि नियुक्ति में कोई गड़बड़ी नहीं हुई है। अब वे आवास आवंटन को लेकर मेरे खिलाफ जांच बैठाई है। उन्होंने जब राज्यपाल के पास अपनी बात रखी है तभी से विश्वविद्यालय प्रशासन बौखलाया हुआ है और कार्रवाई की बात कर रहा है।

क्या कहना है कुलपति का

“कुलपति प्रो. राणा कृष्ण पाल सिंह का कहना है कि जांच समिति माननीय न्यायालय के निर्देशों पर गठित की गई थी और संबंधित कार्यवाही वीडियो ग्राफी के साथ नियमों के मुताबिक हुई है। शिकायतकर्ता जांच के दौरान लगाए गए आरोपों को साबित नहीं कर सकीं। उनके पास विश्वविद्यालय से ऊपर जांच समिति के निर्णय के खिलाफ अपील करने का पूरा हक है और विश्वविद्यालय प्रशासन उनका पूरा समर्थन करेगा। उन्होंने जवाबी आरोप लगाते हुए कहा कि शिकायतकर्ता द्वारा लगाए गए आरोप एक जांच को पटरी से उतारने का प्रयास प्रतीत होता है जिसमें पिछली सरकार में की गई गलत नियुक्तियों की जांच की जा रही है। इसमें शिकायतकर्ता का भी नाम है।

यूपी में टिकट कटने से उत्तराखंड में भाजपा विधायकों की धड़कनें तेज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। भाजपा ने उत्तर प्रदेश में पहले व दूसरे चरण के चुनाव के लिए प्रत्याशियों की जो सूची जारी की है, उसमें 20 सिटिंग विधायकों के टिकट काट दिए हैं। यूपी में विधायकों के टिकट काटे जाने से उत्तराखंड में भाजपा विधायकों की धड़कने तेज हो गई हैं। अपना टिकट बचाने की जुगत में कई विधायक प्रदेश और केंद्रीय नेताओं के चक्कर काट रहे हैं। चुनाव समिति की बैठक के बाद ऐसे संकेत मिले हैं कि 12 से 15 विधायकों के टिकट काट सकती है।

विधान सभा के लिए भाजपा ने यूपी में पहले व दूसरे चरण के मतदान वाली की 83 सीटों के लिए प्रत्याशियों की सूची जारी की। इसमें 63 सिटिंग विधायकों को दोबारा चुनाव लड़ने का मौका दिया गया। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, उत्तराखंड में भी भाजपा टिकटों के आवंटन तकरीबन यही प्रयोग कर सकती है। यानी 12 से 15 विधायक इस बार टिकट से हाथ धो सकते हैं। हालांकि पार्टी के एक वरिष्ठ नेता के मुताबिक टिकट से वंचित होने वाले सिटिंग विधायकों की संख्या अधिक भी हो सकती है। पार्टी सूत्रों

» केंद्रीय नेताओं के काट रहे चक्कर, केंद्रीय कमेटी दोहरा सकती यूपी का फार्मूला

के मुताबिक, भाजपा में कई सिटिंग विधायकों को अपना टिकट काटे जाने का खटका हो चुका है। यही वजह है कि अपना टिकट बचाने के लिए उन्होंने दौड़ शुरू कर दी है। करीब 12 से 15 विधायक पार्टी के चुनाव प्रभारी प्रह्लाद जोशी, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, प्रदेश प्रभारी दुष्यंत गौतम, प्रदेश महामंत्री संगठन अजेय कुमार से मुलाकात कर अपनी दावेदारी पैरवी कर चुके हैं।

कोर ग्रुप और चुनाव समिति की बैठक की पूर्व संध्या पर भी विधायकों पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत से मुलाकात की थी। इस मुलाकात को उनके टिकट बचाने की कोशिशों के तौर पर देखा गया।

किसान समाज मोर्चा में नहीं बनी सहमति, प्रत्याशियों की सूची टली

» पंजाब चुनाव: स्क्रीनिंग कमेटी में आपस में ही उलझ गए नेता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लुधियाना। पंजाब विधानसभा चुनाव को लेकर जहां अकाली दल, आप और कांग्रेस के अधिकांश उम्मीदवारों की घोषणा हो चुकी है। वहीं किसान आंदोलन कर पंजाब के चुनाव मैदान में उतरे संयुक्त समाज मोर्चा ने अभी अपने 10 ही उम्मीदवारों का ऐलान किया है। संयुक्त समाज मोर्चा ने रविवार को एक बैठक आयोजित की थी। बैठक में प्रत्याशियों की दूसरी सूची जारी होनी थी लेकिन ऐसा नहीं हो सका।

किसान संगठनों का संयुक्त समाज मोर्चा उम्मीदवारों की दूसरी सूची को लेकर एकमत नहीं हो पाया। उम्मीदवारों की दूसरी सूची रविवार को दूसरी बार फिर टालनी पड़ी है। किसान नेता जंगवीर सिंह और बलवंत सिंह बहिरामके ने कहा कि अभी दूसरी सूची पूरी नहीं हो सकी है,

इसलिए हम सूची जारी नहीं कर रहे हैं। मोर्चा की स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में बलवीर सिंह राजेवाल समेत अन्य नेता शामिल रहे। बताया जा रहा है कि दोपहर बाद जब सूची फाइनल हो रही थी तभी स्क्रीनिंग कमेटी के नेता आपस में उलझ पड़े। यही वजह है कि दूसरी सूची जारी नहीं हो सकी। मोर्चा के वरिष्ठ नेता रुलदू सिंह मानसा ने कहा है कि निश्चित तौर पर हमारी सरकार बनने जा रही है। हमारी तीन कमेटियां बनी हैं जो अब तक के 1273 उम्मीदवारों के आवेदन में से अच्छे उम्मीदवार चुन रही हैं।

आप ने अमरिंदर के सामने अजीत पाल को उतारा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। आम आदमी पार्टी ने रविवार रात को पंजाब विधान सभा चुनाव के लिए तीन प्रत्याशियों की 10वीं सूची जारी की है। पटियाला शहर से आप ने अजीतपाल सिंह कोहली को अपना प्रत्याशी बनाया है। इसी सीट से पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह भी चुनाव मैदान में हैं। पटियाला कैप्टन अमरिंदर सिंह का गढ़ है। पूर्व मेयर अजीतपाल सिंह कोहली ने हाल ही शिरोमणि अकाली दल को अलविदा कह आम आदमी पार्टी का हिस्सा बने थे। इसका इनाम उन्हें टिकट के रूप में मिला है।

फगवाड़ा से जोगिंदर सिंह मान को आप ने टिकट दी है। वहीं लुधियाना पश्चिम से गुरप्रीत सिंह गोगी को आप ने उम्मीदवार बनाया है। हाल में पीएसआईईसी के चेयरमैन गुरप्रीत गोगी ने कांग्रेस को छोड़ आम आदमी पार्टी का दामन थामा था। वह टिकट को लेकर कांग्रेस पार्टी से नाराज चल रहे थे। गोगी मंत्री भारत भूषण आशु को टक्कर देंगे। आप अब तक 112 उम्मीदवारों की घोषणा

» आप ने जारी की तीन प्रत्याशियों की सूची

कर चुकी है। पटियाला को पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह का गढ़ माना जाता है। 2017 के चुनाव में भी कांग्रेस ने कैप्टन के नेतृत्व में केवल सन्नौर सीट को छोड़कर यहां की बाकी सभी सात विधान सभा सीटों पर जीत दर्ज की थी। खास तौर से पटियाला सीट पर तो पिछले करीब 20 सालों से कैप्टन अमरिंदर सिंह का कब्जा रहा है। 2002 से 2014 तक लगातार वह पटियाला से विधायक रहे हैं। 2014 में अमृतसर सीट से भाजपा नेता अरुण जेटली के खिलाफ लोक सभा चुनाव लड़ने के कारण कैप्टन को विधान सभा की सदस्यता से इस्तीफा देना पड़ा था लेकिन फिर भी इस सीट पर कैप्टन के शाही परिवार का ही कब्जा रहा क्योंकि कैप्टन के इस्तीफे बाद पत्नी परनीत कौर उपचुनाव लड़ीं और जीतने में भी सफल रहीं।

उत्तर प्रदेश में कोरोना का कहर संक्रमितों की संख्या एक लाख के पार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कोरोना वायरस की तीसरी लहर का प्रसार यूपी में रफ्तार पकड़ने लगा है। प्रदेश में कोरोना संक्रमण तेजी से फैलने के कारण मरीजों की संख्या एक लाख के पार पहुंच गई है। बीते 24 घंटे के दौरान प्रदेश में 2,57,694 नमूनों की जांच की गई जिसमें कोरोना संक्रमण के 17,185 नए केस सामने आए। इस अवधि में कोरोना संक्रमित 10 मरीजों की मौत ने दहशत बढ़ा दी है। प्रदेश में अब कोरोना संक्रमण के 1,03,474 सक्रिय केस हो गए हैं।

प्रदेश में बीते 24 घंटे के दौरान सर्वाधिक 2392 नए मरीज लखनऊ में मिले हैं। इसके अलावा जिन अन्य जिलों में कोरोना के ज्यादा मरीज मिले हैं, उनमें 2099 गाजियाबाद में, 1498 गौतम बुद्ध नगर में, 1206 मेरठ में, 537 वाराणसी और 515 रामपुर में पाये गए हैं। वहीं, संक्रमण से गाजियाबाद, गोरखपुर, मुजफ्फरनगर, शामली, गाजीपुर, चंदौली, बस्ती, बलिया,

17,185

नए केस मिले 24 घंटे के दौरान, दस की मौत से हड़कंप

श्रावस्ती व भदोही में एक-एक मरीज की मृत्यु हो गई। बीती पहली जनवरी को प्रदेश में कोरोना के महज 1211 रोगी थे। सिर्फ 15 दिनों में ही प्रदेश में एक लाख से ज्यादा रोगी बढ़ गए हैं। इन संक्रमित रोगियों में से 1096 ही अस्पतालों में भर्ती हैं। बाकी मरीज होम आइसोलेशन में घर पर रहकर ही अपना इलाज करा रहे हैं। प्रदेश में अब तक कोरोना संक्रमण के सर्वाधिक 3.10 लाख सक्रिय केस 30 अप्रैल 2021 को थे। उस दिन सूबे में कोविड के 34,626 नए मरीज मिले थे। कोरोना संक्रमण फिर वही रफ्तार पकड़ रहा है। प्रदेश में अब तक 22 करोड़ 89 लाख लोगों को कोविड टीके की डोज लगाई जा चुकी है। यह देश के किसी एक राज्य में हुआ सर्वाधिक टीकाकरण है। सीएम योगी आदित्यनाथ का निर्देश है कि सभी निगरानी समितियां घर-घर पर दस्तक दें। संदिग्ध लोगों की पहचान करें, टेस्ट कराएं और मेडिकल किट उपलब्ध कराएं।

भोजपुरी गायिका नेहा सिंह ने प्रदेश सरकार पर बोला हमला

किसानन कै छाती पे रौंदत मोटर कार बा गाने से टेंशन में भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले प्रदेश का सियासी रण दिलचस्प होता जा रहा है। इस रण में अब भोजपुरी ट्रैक की एंट्री हुई है। भोजपुरी गानों के जरिए प्रदेश की सियासत को एक अलग ही मोड़ दिया जा रहा है। दरअसल, कुछ दिन पहले भाजपा सांसद व भोजपुरी फिल्म स्टार रवि किशन के यूपी में सब बा गाने को सीएम योगी आदित्यनाथ ने रिलीज किया था। इसके जवाब में भोजपुरी गायिका नेहा सिंह राठौर ने यूपी में का बा गाना रिलीज करके प्रदेश सरकार पर हमला बोला है।

नेहा राठौर ने अपने गाने में भाजपा सरकार पर हमला बोलते हुए लखीमपुर खीरी कांड, हाथरस कांड जैसी घटनाओं का जिक्र किया है। इस गाने को यूट्यूब व ट्विटर पर पोस्ट किया गया है। इस गाने को जनता का अपार जनसमर्थन मिल रहा है। का बा गाने के समर्थन में कई यूजर्स टेनी के इस्तीफे की भी मांग कर रहे हैं। भोजपुरी गायिका नेहा सिंह राठौर कहती हैं- मंत्री का बेटुवा बड़ी रंगदार बा, किसानन कै छाती पे रौंदत मोटर कार बा, अई चौकीदार, बोले के जिम्मेदार बा?

यूपी के रण में भोजपुरी ट्रैक की एंट्री

अब यूपी में का बा

गाने में नेहा कहती हैं- कोरोना से लाखन मर गईल ले, लाशन से गंगा भर गईल बे, कफन नोचत कुकुर बिलार बा, अई बाबा, यूपी में का बा। इसके अलावा नेहा इस गाने में लखीमपुर खीरी कांड का भी जिक्र किया है। उन्होंने गाने में कहा- मंत्री का बेटुवा बड़ी रंगदार बा, किसानन कै छाती पे रौंदत मोटर कार बा, अई चौकीदार, बोले के जिम्मेदार बा? गाने में कई घटनाओं का जिक्र है। नेहा, रवि किशन के चर्चित डॉयलाग जिंदगी झंडवा, फिर भी घमंडवा से गाने को खत्म करती हैं।

यूपी में सब बा

भाजपा सांसद व भोजपुरी फिल्म स्टार रवि किशन द्वारा वायरल गीत में कहा गया है- जे कब्बो ना रहल अब बा, यूपी में सब बा। इस गीत में फर्टिलाइजर, गोरखपुर एम्स, पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे जैसी उपलब्धियों के साथ माफिया के खिलाफ कार्रवाई, गरीबों को राशन जैसी सरकारी योजनाओं का भी जिक्र है। अयोध्या राम मंदिर और काशी कॉरिडोर भी इस गीत का हिस्सा है। गायक रवि किशन भगवा धारण किए हुए अपने अंदाज में हर हर महादेव भी करते नजर आ रहे हैं।

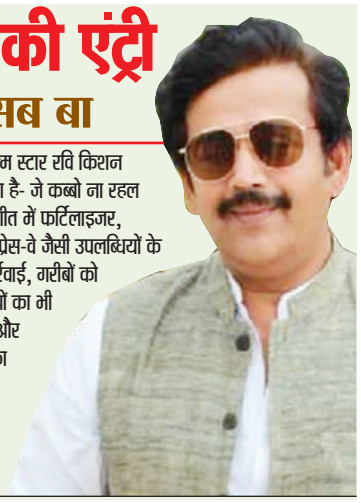

कथक सम्राट बिरजू महाराज के निधन से शोक की लहर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कथक को उत्तर प्रदेश से विश्व फलक पर लाने वाले कथक सम्राट, पद्म विभूषण पंडित बिरजू महाराज का आज निधन हो गया। 83 वर्षीय पंडित बिरजू महाराज के निधन पर राज्यपाल आनंदी बेन पटेल के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने शोक व्यक्त किया है।

शोक संदेश में राज्यपाल ने कहा कि पंडित बिरजू महाराज ने अपनी कला और प्रतिभा के बल पर से पूरे विश्व मे देश और प्रदेश का गौरव बढ़ाया था। उनके निधन से कला जगत को जो हानि हुई है। फिलहाल उसकी भरपाई सम्भव नहीं है। राज्यपाल ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति की प्रार्थना करते हुए पंडित बिरजू महाराज के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, आप के यूपी प्रभारी संजय सिंह व कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी सहित राजनीतिक दलों के नेताओं व प्रबुद्धजीवियों ने भी शोक व्यक्त किया है।

बीजेपी में शामिल हुईं सरिता आर्या हरक सिंह कांग्रेस के पाले में जाएंगे

» उत्तराखंड में नेताओं के पाला बदलने का सिलसिला जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। उत्तर प्रदेश के बाद अब उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव से पहले नेताओं का पाला बदलने का सिलसिला शुरू हो चुका है। मंत्री हरक सिंह रावत के कांग्रेस ज्वाइन करने की खबरों के बीच कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। कांग्रेस की महिला प्रदेश अध्यक्ष सरिता आर्य अब बीजेपी का दामन थामने वाली हैं। वे आज ही बीजेपी की सदस्यता लेगी, वे दिल्ली रवाना भी हो चुकी है।

उधर हरक सिंह भी दिल्ली में है, वे कांग्रेस के उच्च नेताओं से मुलाकात कर रहे हैं। बता दें कि उत्तराखंड में भाजपा में खींचतान लगातार जारी है। कुछ दिन पहले कैबिनेट मीटिंग में इस्तीफा देने के बाद मना लिए गए वरिष्ठ मंत्री हरक सिंह रावत को पार्टी ने बाहर का रास्ता दिखा दिया। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री

कार्यालय ने देर रात बयान जारी कर बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उन्हें अपने मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर दिया है और इसकी जानकारी राज्यपाल को भी भेज दी है। वहीं रावत को 6 साल के लिए भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से भी बर्खास्त कर दिया गया है। हरक सिंह ने इससे पहले भी अपने इलाके में सुविधाओं की मांग करते हुए इस्तीफा दे दिया था। हालांकि उस समय भाजपा आलाकमान के दखल देने से वे मान गए थे। इसके बाद भी चर्चा थी कि उनके और धामी के बीच खींचतान खत्म नहीं हुई है।

पंजाब में चुनाव की तारीख बदली अब 20 फरवरी को वोटिंग

» पहले 14 फरवरी को होना था मतदान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने पंजाब चुनाव को लेकर बड़ा फैसला लिया है। अब वहां 14 फरवरी को नहीं, बल्कि 20 फरवरी को मतदान होगा। यह सहमति आयोग व दलों के सुझाव की बैठक में बनी है। पंजाब विधानसभा चुनाव की तारीख को आगे बढ़ाने की मांग पर निर्वाचन आयोग ने विचार किया तो पाया कि गुरु रविदास जयंती के मद्देनजर विधानसभा चुनाव के लिए 14 फरवरी को प्रस्तावित मतदान को टाला जा सकता है।

बता दें कि पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने निर्वाचन आयोग से रविदास जयंती के मद्देनजर मतदान को छह दिन के लिए टालने का अनुरोध किया था।

एक चरण में प्रस्तावित मतदान को टालने के लिए इसी तरह का अनुरोध भाजपा और बसपा सहित अन्य पार्टियों ने भी किया है।

बता दें कि लाखों श्रद्धालु रविदास जयंती मनाने के लिए उत्तर प्रदेश के वाराणसी जाते हैं और राजनीतिक पार्टियों का मानना है कि वे (श्रद्धालु) इसकी वजह से मतदान नहीं कर पाएंगे। इस साल गुरु रविदास की जयंती 16 फरवरी को पड़ रही है। भाजपा की पंजाब इकाई के महासचिव सुभाष शर्मा ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त को लिखे एक पत्र में चुनाव की तारीख आगे बढ़ाने की मांग करते हुए कहा था कि राज्य में अनुसूचित जाति (एससी) समुदाय सहित गुरु रविदास जी के अनुयायियों की अच्छी खासी आबादी है, जो पंजाब की आबादी का लगभग 32 प्रतिशत है। शर्मा ने लिखा है कि इस पावन अवसर पर लाखों श्रद्धालु उत्तर प्रदेश के बनारस में गुरुपर्व मनाने के लिए जाएंगे। इस कारण से उनके लिए मतदान प्रक्रिया में भाग लेना संभव नहीं होगा। इसलिए आप सभी से अनुरोध है कि मतदान की तिथि को आगे बढ़ाया जाए ताकि पंजाब के ये मतदाता चुनाव प्रक्रिया में भाग ले सकें। पंजाब लोक दल के संस्थापक कैप्टन अमरिंदर सिंह भी यह मांग कर चुके हैं।

प्रयागराज में आचार संहिता का उल्लंघन, चुनाव आयोग मौन

योगी सरकार में दो कैबिनेट मंत्रियों पर आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में चुनाव प्रक्रिया के तहत मतदान अगले महीने है। इस कारण सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी तैयारियों में जुटे हुए हैं। मगर प्रयागराज में योगी सरकार में मंत्री खुलेआम चुनाव आचार संहिता की धज्जियां उड़ा रहे हैं। प्रयागराज जिले के दो कैबिनेट मंत्री सरकारी पुलिस स्कॉट गाड़ियों के काफिले से चुनाव प्रचार कर रहे हैं। दोनों मंत्री चुनाव आचार संहिता की खुलेआम धज्जियां उड़ा रहे है। पुलिस पिकेट के साथ हूटर बजाते हुए क्षेत्र में भ्रमण कर रहे हैं और मतदाताओं को प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रयागराज जिले से दो कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी सिद्धार्थ नाथ सिंह चुनाव आचार संहिता

चुनाव आयोग के नियम

मंत्री या किसी अन्य राजनीतिक कार्यकर्ता को चुनाव आचार संहिता के दौरान निजी या आधिकारिक दौरे पर किसी पायलट कार या पुलैसर लाइट अथवा किसी भी प्रकार के सायरन सहित कार का प्रयोग करने की अनुमति नहीं होती है। भले ही राज्य प्रशासन ने उसे सुरक्षा कवर दिया हो, जिसमें ऐसे दौरों पर उसके साथ सशस्त्र अंगरक्षकों के उपस्थित रहने की आवश्यकता हो। यह निषेध सरकारी व निजी स्वामित्व वाले दोनों प्रकार के वाहनों पर लागू होगा।

लागू होने के बावजूद खुलेआम पुलिस के अधिकारियों के सह से चुनाव आचार संहिता का माखौल उड़ा रहे हैं। दोनों मंत्री बकायदा कई गाड़ियों से चल रहे हैं। साथ ही पुलिस की स्कॉर्ट से सायरन बजाते हुए आदर्श चुनाव संहिता की धज्जियां उड़ा रहे हैं। बावजूद चुनाव आयोग कोई एक्शन नहीं ले रहा है। इसको लेकर विपक्ष खासा नाराज है। विपक्ष के नेताओं का कहना है कि आने वाले 10 मार्च को जनता खुद ही भाजपा को इसका जवाब दे देगी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।